प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

पंतनगर में अखिल भारतीय परियोजना की कार्यशाला सम्पन्न

पंतनगर के शोध केन्द्र को मिला सम्मान

पंतनगर। ०५ मई, २०१७। पंतनगर विश्वविद्यालय में चल रही सोयाबीन की अखिल भारतीय समन्वित शोध परियोजना की ४७वीं वार्षिक समूह बैठक का कल देर सायं समापन हुआ। समापन सत्र में पंतनगर में संचालित सोयाबीन केन्द्र को विगत ५ दशकों से सम्पन्न किये जा रहे उत्कृष्ट शोध कार्य, बीज उत्पादन एवं प्रजातियों के विकास हेतु सराहना प्रमाण-पत्र दिया गया। समापन सत्र की अध्यक्षता पंतनगर विश्वविद्यालय के कुलपति, डा. जे. कुमार द्वारा की गयी।

डा. जे.कुमार ने कहा कि अखिल भारतीय समन्वित परियोजना में वैज्ञानिकों द्वारा किये गये कार्यों के फलस्वरुप सोयाबीन के क्षेत्रफल में काफी वृद्धि हुयी है। इस फसल से न सिर्फ अधिकतम प्रोटीन प्राप्त होता है बल्कि औसतन २० प्रतिशत तेल भी प्राप्त होता है तथा इसकी खली (डी.ओ.सी.) से लगभग १६०० करोड़ रूपये की विदेशी मुद्रा भी अर्जित हो रही है। उन्होंने कहा कि यह फसल भविष्य के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है, जो किसानों की आर्थिकी को उन्नत करने के साथ-साथ पोषण सुरक्षा व तेल की उपलब्धता में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान देगी। आने वाले समय में आवश्यकता इस बात कि है कि युवा वैज्ञानिक बदलते जलवायु परिवेश में इसकी और अधिक उन्नतशील प्रजातियां विकसित करें, जिससे प्रति हैक्टर औसत उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ बाजार में इसकी मांग और बढ़े।

इस अवसर पर भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के सहायक महानिदेशक (तिलहन एवं दलहन), डा. एस.के. चतुर्वेदी, ने कार्यशाला को सफलतापूर्वक आयोजित करने हेतु कुलपति एवं वैज्ञानिकों का आभार प्रकट किया तथा विभिन्न व्यवस्थाओं को संचालित करने हेतु बनायी गयी समितियों के कार्यों की सराहना की। कार्यशाला में की गयी संस्तुतियों को समापन सत्र में प्रस्तुत किया गया। समापन भाषण में भारतीय सोयाबीन अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. वी.एस. भाटिया ने बताया कि देश के विभिन्न केन्दों से विकसित ७ किस्मों को विमोचन हेतु चिन्हित किया गया, जिनमें पंतनगर विश्वविद्यालय द्वारा विकसित प्रजाति, पी.एस.-१५५६, उत्तर भारत के पर्वतीय क्षेत्रों के साथ-साथ उत्तर मैदानी क्षेत्रों के लिए भी चिन्हित की गयी है। यह किस्म अधिक उपज देने के साथ-साथ उक्त क्षेत्रों में व्याप्त प्रमुख रोगों जैसे पीला विषाणु एवं सरकोस्पोरा बिमारी के लिए रोगरोधी है। तीन दिवसीय इस बैठक में पिछले वर्षो में किये गये कार्यो की समीक्षा के साथ आगामी वर्ष २०१७-१८ के लिए अनुसंधान की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए शोध आदि की रणनीति भी तय की गयी।

विश्वविद्यालय के निदेशक शोध, डा. जे.पी. सिंह, ने इस अवसर पर आई.सी.ए.आर परियोजनाओं में समय से आवश्यक धन उपलब्ध कराये जाने के लिए कहा, ताकि शोध कार्य बाधित ना हो। समापन सत्र में आठ तकनीकी सत्रों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया। अन्त में कार्यक्रम समन्वयक एवं पंतनगर में परियोजना के मुख्य अन्वेष्क, डा. पुष्पेन्द्र, ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन डा. पी.एस. शुक्ला ने किया। कार्यक्रम में प्रमुख रुप से अधिष्ठाता कृषि, डा. डी. एस. पान्डे, डा. कामेन्द्र, डा. रावेरकर, डा. नीता गौड़, डा. के.पी. सिह, डा. एस.सी. सक्सेना डा. नरेन्द्र कुमार, डा. अजय श्रीवास्तव. डा. मनोज कुमार, श्री सुशील कुमार. श्री आर.बी. सचान. डा. डालचन्द आदि ने अपना योगदान दिया। इस परियोजना में देश भर के १२० से अधिक वैज्ञानिकों ने प्रतिभाग किया।

पंतनगर के सोयाबीन केन्द्र को मिले सराहना प्रमाण-पत्र को कुलपति, डा. जे. कुमार, से प्राप्त करते सम्बन्धित वैज्ञानिक गण